

## क. यरूशलेम के विनाश से सबक:

### ❖ परमेश्वर के प्रेम की अस्वीकृति।

- यरूशलेम के निकट पहुँचकर यीशु रोया (लूका 19:41-44)। वह जानता था कि वे परमेश्वर की प्रेमपूर्ण पुकार को हठपूर्वक अस्वीकार करने के सुयोग्य परिणाम भुगतेंगे (मत्ती 23:37)।
- वह रोया क्योंकि इस त्रासदी को टाला जा सकता था। क्योंकि परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह नहीं चाहता कि कोई मरे, परन्तु हर एक को अनन्त जीवन मिले (यूहन्ना 5:39-40; यहजकेल 18:31-32)।
- इतिहास हमें बताता है कि यहूदियों ने वर्ष 66 में रोमन दुर्व्यवहारों के विरुद्ध विद्रोह किया था। विभिन्न यहूदी गुट आपस में लड़ते रहे, जबकि रोमियों ने शहर की घेराबंदी कर दी। सन् 70 में सब कुछ खत्म हो गया। तीतुस ने यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया। दस लाख यहूदी मारे गये।
- लेकिन इतिहास हमें यह नहीं बताता कि शैतान ने यहूदियों को विद्रोह के लिए और रोमियों को बदला लेने के लिए कैसे उकसाया। यरूशलेम का विनाश शैतान का प्रत्यक्ष कार्य था। जीवन के स्रोत से विमुख होकर, इस्राएल एक ऐसे शत्रु की दया पर निर्भर था जो केवल विनाश और मृत्यु चाहता था।

### ❖ परमेश्वर की अपने लोगों की परवाह।

- अपने प्रेम में, परमेश्वर ने उन सभी को अवसर दिया जो विनाश से बचना चाहते थे। उसने एक चिन्ह दिया: जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। (लूका 21:20)।
- गयुस सेस्टियस गैलस ने उस संकेत को वर्ष 66 में पूरा किया। घेराबंदी हटा ली गई, और कट्टरपंथी नेता एलीआजर बेन साइमन ने रोमियों का पीछा किया और उन्हें हरा दिया।
- यीशु के शब्दों पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने उस क्षण का लाभ उठाया जब यरूशलेम को भागने के लिए बिना घेराबंदी के छोड़ दिया गया था।
- कुछ महीने बाद, नीरो ने विद्रोह को दबाने के लिए वेस्पासियन को भेजा। सन् 67 से 70 तक घेरा स्थाई बना रहा।
- परमेश्वर सबसे कठिन समय में भी अपने बच्चों की रक्षा कर सकता है और करना चाहता है (भजन संहिता 46:1; यशायाह 41:10)। हालाँकि, परमेश्वर के प्रति अपनी वफादारी के कारण कई लोगों ने अपनी जान भी गंवाई है (इब्रानियों 11:35-38)।
- क्यों कुछ को संरक्षित किया जाता है और दूसरों को, जाहिरा तौर पर, परमेश्वर द्वारा त्याग दिया जाता है?

## ख. प्रारंभिक मसीहियों से सबक:

### ❖ अनुसरण में निष्ठा।

- शुरुआत वास्तव में आशाजनक थी: धर्म-परिवर्तन हजारों की संख्या में हो रहे थे (प्रेरितों के काम 2:41; 4:4); विश्वासियों ने शक्ति के साथ प्रचार किया (प्रेरितों के काम 4:31; 5:42)।
- लेकिन दुश्मन बेचैन था। पहले धमकियाँ (प्रेरितों के काम 4:17-18); फिर, दण्ड (प्रेरितों के काम 5:40); अंत में, मृत्यु (प्रेरितों के काम 7:59)।
- शाऊल के सताए जाने के कारण चले तितर-बितर हो गए (प्रेरितों के काम 8:1)। लेकिन, ज्योति बुझने के बजाय, विश्वासियों की विश्वासयोग्यता के कारण, यह पूरे ज्ञात विश्व में बहुत अधिक चमक के साथ चमकी (प्रेरितों के काम 8:4; 11:19-21; रमियों 15:19; कुलुसियों 1:23)।
- यीशु ने अपनी कलीसिया को एक आदेश और इसे आगे ले जाने की शक्ति दी (प्रेरितों के काम 1:8)। कोई भी शक्ति, भौतिक या आध्यात्मिक, सुसमाचार की प्रगति को नहीं रोक सकती है (मत्ती 16:18)। "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31)

### ❖ ज़रूरतमंदों की मदद।

- प्रारंभिक मसीहियों पर सुसमाचार का क्या प्रभाव पड़ा? (प्रेरितों के काम 2:42-47)?
- मसीह के राजदूत के रूप में, उन्होंने यीशु का अनुकरण किया। अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों का ख्याल रखकर, उन्होंने पूरे शहर का समर्थन प्राप्त किया।
- इस लिए, कलीसिया की विशेषता मसीहियों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम और अपने समुदाय के प्रति चिंता होनी चाहिए।

### ❖ प्रेम, हमारी पहचान का चिन्ह।

- ब्रह्मांडीय संघर्ष में शामिल प्रत्येक पक्ष की अपनी विशेषताएं हैं: शैतान नफरत करता है और नष्ट कर देता है; परमेश्वर प्रेम करता है और पुनर्स्थापित करता है।
- एक या दूसरी पार्टी के अनुयायी इन नमूनों के अनुसार कार्य करते हैं। यदि हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, तो हम इसे दूसरों को दिखाए गए प्रेम के माध्यम से दिखाएंगे (1 यूहन्ना 4:20-21)।
- दूसरी और तीसरी शताब्दी के मसीहियों ने निःस्वार्थ प्रेम को व्यवहार में लाया। दो प्रमुख महामारियों (वर्ष 160 और 265 में) के दौरान, उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, प्रभावित लोगों की देखभाल के लिए खुद को समर्पित कर दिया।
- उन्होंने स्वयं को प्रेम के कारण समर्पित कर दिया, और उन्होंने लाखों लोगों को लाभ पहुँचाया। परन्तु उन्होंने अपना ध्यान अपनी ओर नहीं, बल्कि उसकी ओर आकर्षित किया जिसके लिए वे अपना जीवन देने को तैयार थे, अपने उद्धारकर्ता: यीशु की ओर।